पूँजीवाद की तरफ बढ़ता विश्व : वैश्वीकरण के युग में अवसर एवं चुनौतियाँ

Bindhaya Basini Tiwari
Assistant Professor, VSAV PG COLLEGE GOLA GORAKHPUR

सार (Abstract)

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में पूँजीवाद विश्व की प्रमुख आर्थिक व्यवस्था के रूप में स्थापित हो चुका है। वैश्वीकरण, उदारीकरण तथा निजीकरण की नीतियों ने पूँजी के मुक्त प्रवाह, अंतरराष्ट्रीय व्यापार तथा बहुराष्ट्रीय कंपनियों के विस्तार को गति प्रदान की है। इससे अनेक देशों में आर्थिक विकास, तकनीकी प्रगति तथा निवेश के नए अवसर उत्पन्न हुए हैं। दूसरी ओर, आय एवं संपत्ति की असमानता, श्रमिक अधिकारों का ह्रास, पर्यावरणीय संकट तथा विकासशील देशों की आर्थिक निर्भरता जैसी गंभीर चुनौतियाँ भी सामने आई हैं। प्रस्तुत अध्ययन में पूँजीवाद की अवधारणा, उसके ऐतिहासिक विकास, वैश्वीकरण के साथ उसके संबंध तथा समकालीन विश्व राजनीति और अर्थव्यवस्था पर उसके प्रभावों का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन का निष्कर्ष यह है कि पूँजीवाद आर्थिक विकास का महत्वपूर्ण माध्यम है, किंतु इसे सामाजिक न्याय, समावेशी विकास तथा सतत् विकास के सिद्धांतों के साथ संतुलित करना आवश्यक है।

मुख्य शब्द: पूँजीवाद, वैश्वीकरण, उदारीकरण, निजीकरण, विश्व अर्थव्यवस्था, नवउदारवाद, आर्थिक विकास, सामाजिक असमानता।

1. भूमिका

बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध तथा इक्कीसवीं शताब्दी के प्रारंभ से वैश्विक राजनीति और अर्थव्यवस्था में व्यापक परिवर्तन देखने को मिले हैं। शीत युद्ध की समाप्ति, सोवियत संघ के विघटन तथा वैश्वीकरण की तीव्र गति ने विश्व व्यवस्था को नई दिशा प्रदान की। इस परिवर्तन का सबसे महत्वपूर्ण परिणाम यह रहा कि अधिकांश देशों ने बाजार आधारित आर्थिक नीतियों को अपनाया और पूँजीवाद वैश्विक आर्थिक व्यवस्था का प्रमुख आधार बन गया।

पूँजीवाद ऐसी आर्थिक व्यवस्था है जिसमें उत्पादन के साधनों पर निजी स्वामित्व, मुक्त प्रतिस्पर्धा तथा लाभ अर्जन को आर्थिक गतिविधियों का प्रमुख आधार माना जाता है। प्रसिद्ध अर्थशास्त्री एडम स्मिथ ने मुक्त बाजार और प्रतिस्पर्धा को आर्थिक समृद्धि का आधार बताया, जबकि कार्ल मार्क्स ने पूँजीवाद की आलोचना करते हुए इसे आर्थिक असमानता और वर्ग संघर्ष का कारण माना। आज भी यह बहस राजनीतिक विज्ञान और अर्थशास्त्र में अत्यंत महत्वपूर्ण है।

वैश्वीकरण ने पूँजीवाद के विस्तार को अभूतपूर्व गति प्रदान की है। बहुराष्ट्रीय कंपनियों, विदेशी प्रत्यक्ष निवेश, डिजिटल अर्थव्यवस्था तथा मुक्त व्यापार समझौतों ने देशों के बीच आर्थिक संबंधों को और अधिक मजबूत बनाया है। भारत सहित अनेक विकासशील देशों ने आर्थिक सुधारों के माध्यम से वैश्विक बाजार के साथ अपने संबंधों का विस्तार किया है। इसके परिणामस्वरूप उत्पादन, निवेश तथा रोजगार के नए अवसर उत्पन्न हुए, किंतु साथ ही सामाजिक एवं आर्थिक विषमताओं में भी वृद्धि हुई।

इस शोध-पत्र का उद्देश्य पूँजीवाद की ओर बढ़ते विश्व की प्रवृत्ति का राजनीतिक एवं आर्थिक विश्लेषण करना तथा उसके सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभावों का सम्यक् मूल्यांकन करना है।

2. अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध-पत्र के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं–

पूँजीवाद की अवधारणा एवं उसके विकास का अध्ययन करना।
वैश्वीकरण और पूँजीवाद के पारस्परिक संबंधों का विश्लेषण करना।
पूँजीवादी व्यवस्था के आर्थिक, राजनीतिक एवं सामाजिक प्रभावों का मूल्यांकन करना।
पूँजीवाद से उत्पन्न अवसरों एवं चुनौतियों का समालोचनात्मक अध्ययन करना।
भारत सहित विकासशील देशों पर पूँजीवादी नीतियों के प्रभावों का परीक्षण करना।

3. शोध पद्धति

यह शोध मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों (Secondary Sources) पर आधारित है। अध्ययन के लिए विभिन्न पुस्तकों, शोध-पत्रों, राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय पत्रिकाओं, सरकारी रिपोर्टों, विश्व बैंक (World Bank), अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) तथा विश्व व्यापार संगठन (WTO) के प्रकाशित दस्तावेजों का उपयोग किया गया है। विषय के विश्लेषण में वर्णनात्मक (Descriptive) एवं विश्लेषणात्मक (Analytical) पद्धति का प्रयोग किया गया है।

4. पूँजीवाद की अवधारणा एवं विकास

पूँजीवाद एक ऐसी आर्थिक व्यवस्था है जिसमें उत्पादन के साधनों पर निजी स्वामित्व होता है तथा बाजार की शक्तियाँ वस्तुओं एवं सेवाओं के उत्पादन और वितरण का निर्धारण करती हैं। इसका मूल उद्देश्य अधिकतम लाभ अर्जित करना तथा मुक्त प्रतिस्पर्धा को प्रोत्साहित करना है।

अठारहवीं शताब्दी में औद्योगिक क्रांति के साथ पूँजीवाद का विकास प्रारंभ हुआ। प्रसिद्ध अर्थशास्त्री एडम स्मिथ ने अपनी पुस्तक The Wealth of Nations में मुक्त बाजार व्यवस्था का समर्थन करते हुए कहा कि प्रतिस्पर्धा और निजी स्वार्थ अंततः समाज के समग्र आर्थिक विकास में योगदान देते हैं। इसके विपरीत कार्ल मार्क्स ने अपनी प्रसिद्ध कृति Das Kapital में पूँजीवाद की आलोचना करते हुए इसे वर्ग संघर्ष, श्रमिक शोषण तथा आर्थिक असमानता का प्रमुख कारण बताया।

समय के साथ पूँजीवाद का स्वरूप भी बदलता गया। औद्योगिक पूँजीवाद से आगे बढ़कर आज विश्व डिजिटल पूँजीवाद, वित्तीय पूँजीवाद तथा वैश्विक पूँजीवाद के दौर में प्रवेश कर चुका है। बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ, वैश्विक वित्तीय संस्थाएँ तथा तकनीकी कंपनियाँ विश्व अर्थव्यवस्था को प्रभावित कर रही हैं। इंटरनेट, कृत्रिम बुद्धिमत्ता तथा डिजिटल व्यापार ने पूँजीवाद को नई गति प्रदान की है।

5. वैश्वीकरण के युग में पूँजीवाद का विस्तार

बीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक में वैश्वीकरण ने विश्व अर्थव्यवस्था की संरचना में व्यापक परिवर्तन किया। व्यापारिक प्रतिबंधों में कमी, विदेशी निवेश को प्रोत्साहन तथा संचार और परिवहन के विकास ने विश्व को एक साझा आर्थिक मंच में परिवर्तित कर दिया।

आज विश्व की अधिकांश अर्थव्यवस्थाएँ मुक्त बाजार व्यवस्था को अपनाने की दिशा में अग्रसर हैं। बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ विभिन्न देशों में निवेश कर रही हैं, जिससे उत्पादन क्षमता, तकनीकी विकास और रोजगार के अवसरों में वृद्धि हुई है। विश्व व्यापार संगठन (WTO) की नीतियों ने अंतरराष्ट्रीय व्यापार को बढ़ावा दिया है तथा वैश्विक प्रतिस्पर्धा को मजबूत बनाया है।

भारत में वर्ष 1991 के आर्थिक सुधारों के बाद उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण की नीतियों को अपनाया गया। इन सुधारों के परिणामस्वरूप विदेशी निवेश में वृद्धि हुई, सूचना प्रौद्योगिकी, दूरसंचार और सेवा क्षेत्र का तीव्र विकास हुआ तथा भारत वैश्विक अर्थव्यवस्था का महत्वपूर्ण भाग बन गया।

हालाँकि वैश्वीकरण के कारण विकासशील देशों को वैश्विक बाजार में अवसर मिले, लेकिन विकसित देशों और बहुराष्ट्रीय कंपनियों का प्रभाव भी बढ़ा। इससे कई बार आर्थिक निर्भरता तथा नीति-निर्माण पर बाहरी प्रभाव की स्थिति उत्पन्न होती है।

6. पूँजीवाद के अवसर एवं लाभ

वैश्वीकरण के युग में पूँजीवाद ने विश्व अर्थव्यवस्था को नई दिशा प्रदान की है। मुक्त बाजार व्यवस्था के कारण उत्पादन, व्यापार और निवेश के क्षेत्र में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। प्रतिस्पर्धा ने उद्योगों को नवीन तकनीकों को अपनाने के लिए प्रेरित किया, जिससे उत्पादन क्षमता और गुणवत्ता दोनों में सुधार हुआ।

पूँजीवादी व्यवस्था का एक प्रमुख लाभ यह है कि यह नवाचार (Innovation) को प्रोत्साहित करती है। नई तकनीकों के विकास, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence), डिजिटल अर्थव्यवस्था तथा ई-कॉमर्स के विस्तार ने विश्व अर्थव्यवस्था को अधिक गतिशील बनाया है। आज विश्व की प्रमुख कंपनियाँ अनुसंधान एवं विकास (Research and Development) पर भारी निवेश कर रही हैं, जिसके परिणामस्वरूप स्वास्थ्य, शिक्षा, परिवहन तथा संचार जैसे क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रगति हुई है।

विदेशी प्रत्यक्ष निवेश (Foreign Direct Investment) ने विकासशील देशों में औद्योगिक विकास को गति प्रदान की है। भारत, चीन, वियतनाम तथा अन्य एशियाई देशों ने विदेशी निवेश के माध्यम से रोजगार के नए अवसर सृजित किए हैं। इससे आर्थिक विकास की गति तेज हुई तथा निर्यात में वृद्धि हुई।

उपभोक्ताओं की दृष्टि से भी पूँजीवाद लाभदायक सिद्ध हुआ है। प्रतिस्पर्धा के कारण वस्तुओं एवं सेवाओं की गुणवत्ता में सुधार हुआ तथा उपभोक्ताओं को अधिक विकल्प उपलब्ध हुए। वैश्विक व्यापार के कारण अनेक उत्पाद अपेक्षाकृत कम कीमतों पर उपलब्ध हो रहे हैं।

राजनीतिक दृष्टि से भी आर्थिक समृद्धि कई देशों में लोकतांत्रिक संस्थाओं को मजबूत करने में सहायक रही है। आर्थिक विकास के कारण शिक्षा, स्वास्थ्य तथा आधारभूत संरचना में निवेश बढ़ा है, जिससे मानव विकास के विभिन्न संकेतकों में सुधार देखने को मिला है।

7. पूँजीवाद की चुनौतियाँ एवं आलोचनात्मक विश्लेषण

यद्यपि पूँजीवाद ने आर्थिक विकास को गति दी है, परंतु इसके अनेक नकारात्मक प्रभाव भी सामने आए हैं। सबसे बड़ी चुनौती आर्थिक असमानता है। विश्व स्तर पर संपत्ति का बड़ा भाग सीमित व्यक्तियों और बड़ी कंपनियों के नियंत्रण में केंद्रित होता जा रहा है, जबकि निम्न एवं मध्यम वर्ग के लोगों की आय अपेक्षाकृत धीमी गति से बढ़ रही है। इससे सामाजिक एवं आर्थिक विषमताएँ बढ़ती हैं।

दूसरी प्रमुख चुनौती श्रमिकों के अधिकारों से जुड़ी है। अधिक लाभ अर्जित करने की प्रतिस्पर्धा में कई कंपनियाँ श्रम लागत कम करने का प्रयास करती हैं, जिसके कारण अस्थायी रोजगार, कम वेतन तथा श्रमिक असुरक्षा जैसी समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं में कार्यरत श्रमिकों की कार्य परिस्थितियों को लेकर भी समय-समय पर प्रश्न उठते रहे हैं।

पर्यावरणीय संकट भी पूँजीवादी विकास मॉडल की महत्वपूर्ण आलोचनाओं में से एक है। तीव्र औद्योगिकीकरण, प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन तथा जीवाश्म ईंधनों पर निर्भरता ने जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण और जैव विविधता के ह्रास जैसी समस्याओं को बढ़ाया है। इसलिए आज "सतत विकास" (Sustainable Development) की अवधारणा पहले से अधिक महत्वपूर्ण हो गई है।

राजनीतिक दृष्टि से भी पूँजीवाद अनेक प्रश्न खड़े करता है। बहुराष्ट्रीय कंपनियों तथा वैश्विक वित्तीय संस्थाओं का प्रभाव कई बार राष्ट्रीय नीतियों को प्रभावित करता है। विकासशील देशों को विदेशी निवेश आकर्षित करने के लिए ऐसी आर्थिक नीतियाँ अपनानी पड़ती हैं जिनका सामाजिक प्रभाव हमेशा सकारात्मक नहीं होता।

भारत के संदर्भ में 1991 के आर्थिक सुधारों ने आर्थिक विकास को गति दी, परंतु क्षेत्रीय असमानता, कृषि संकट तथा संगठित और असंगठित क्षेत्र के बीच आय के अंतर जैसी चुनौतियाँ भी सामने आईं। इसलिए आर्थिक विकास के साथ सामाजिक न्याय और समावेशी विकास को समान महत्व देना आवश्यक है।

8. निष्कर्ष

पूँजीवाद और वैश्वीकरण ने आधुनिक विश्व की आर्थिक एवं राजनीतिक संरचना को गहराई से प्रभावित किया है। इन दोनों प्रक्रियाओं ने उत्पादन, व्यापार, निवेश तथा तकनीकी विकास के नए अवसर प्रदान किए हैं, जिससे अनेक देशों की आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है। दूसरी ओर, आय असमानता, श्रमिक शोषण, पर्यावरणीय संकट तथा सामाजिक विषमताएँ भी बढ़ी हैं।

राजनीतिक विज्ञान के दृष्टिकोण से यह स्पष्ट है कि केवल मुक्त बाजार व्यवस्था से समावेशी विकास सुनिश्चित नहीं किया जा सकता। राज्य की सक्रिय भूमिका, प्रभावी नियमन, सामाजिक सुरक्षा, श्रमिक अधिकारों की रक्षा तथा पर्यावरण संरक्षण जैसी नीतियाँ आवश्यक हैं। आर्थिक विकास तभी सार्थक माना जाएगा जब उसका लाभ समाज के सभी वर्गों तक समान रूप से पहुँचे।

अतः यह कहा जा सकता है कि पूँजीवाद आधुनिक विश्व की एक प्रभावशाली आर्थिक व्यवस्था है, किंतु इसकी सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि इसे सामाजिक न्याय, लोकतांत्रिक मूल्यों तथा सतत विकास के सिद्धांतों के साथ किस प्रकार संतुलित किया जाता है। यही संतुलित दृष्टिकोण भविष्य की वैश्विक व्यवस्था को अधिक न्यायपूर्ण, समावेशी और टिकाऊ बना सकता है।

संदर्भ (References)

Smith, Adam. The Wealth of Nations. 1776.
Marx, Karl. Das Kapital. 1867.
Heywood, Andrew. Political Ideologies. Palgrave Macmillan.
Ramesh Singh. Indian Economy. McGraw Hill.
World Bank. World Development Report.
International Monetary Fund (IMF). World Economic Outlook.
World Trade Organization (WTO). Annual Report.
Amartya Sen. Development as Freedom.
Government of India. Economic Survey (latest available edition).
Ram Ahuja. Indian Social System.